24-07-70 ओम शान्ति अव्यक्त बापदादा मधुबन

"बिन्दु रूप की स्थिति सहज कैसे बनें?"

सभी जिस स्थिति में अभी बैठे हैं, उसको कौन सी स्थिति कहेंगे? व्यक्त में अव्यक्त स्थिति है? बापदादा से मुलाक़ात करते समय बिंदु रूप की स्थिति में स्थित रह सकते हो? (हरेक ने अपना-अपना विचार सुनाया) बिंदु रूप की स्थिति विशेष किस समय बनती है? जब एकांत में बैठे हो तब या चलते फिरते भी हो सकती है? अंतिम पुरुषार्थ याद का ही ही। इसलिए याद की स्टेज वा अनुभव को भी बुद्धि में स्पष्ट समझना आवश्यक है। बिंदु रूप की स्थिति क्या है और अव्यक्त स्थिति क्या है, दोनों का अनुभव क्या-क्या है? क्योंकि नाम दो कहते हैं तो ज़रूर दोनों के अनुभव में भी अंतर होगा। चलते-फिरते बिंदु रूप की स्थिति इस समय कम भी नहीं लेकिन ना के बराबर ही कहें। इसका भी अभ्यास करना चाहिए। बीच-बीच में एक दो मिनट भी निकाल कर इस बिंदी रूप की प्रैक्टिस करनी चाहिए। जैसे जब कोई ऐसा दिन होता है तो सारे चलते-फिरते हुए ट्राफिक को भी रोक कर तीन मिनट साइलेंस की प्रैक्टिस कराते हैं। सारे चलते हुए कार्य को स्टॉप कर लेते हैं। आप भी कोई कार्य करते हो वा बात करते हो तो बीच-बीच में यह संकल्पों की ट्राफिक को स्टॉप करना चाहिए। एक मिनिट के लिए भी मन के संकल्पों को चाहे शरीर द्वारा चलते हुए कर्म को बीच में रोक कर भी यह प्रैक्टिस करना चाहिए। अगर यह प्रैक्टिस नहीं करेंगे तो बिंदु रूप की पावरफुल स्टेज कैसे और कब ला सकेंगे? इसलिए यह अभ्यास करना आवश्यक है। बीच-बीच में यह प्रैक्टिस में करते रहेंगे तो जो आज यह बिंदु रूप की स्थिति मुश्किल लगती है वह सरल हो जाएगी जैसे अभी मैजारिटी को अव्यक्त स्थिति सहज लगती है। पहले जब अभ्यास शुरू किया तो व्यक्त में अव्यक्त स्थिति में रहना भी मुश्किल लगता था। अभी अव्यक्त स्थिति में रह कार्य करना जैसे सरल होता जा रहा है वैसे ही यह बिन्दुरूप की स्थिति भी सहज हो जाएगी। अभी महारथियों को यह प्रैक्टिस करनी चाहिए। समझा।

फ़रिश्ता रूप की स्थिति अर्थात् अव्यक्त स्थिति जिसकी सदाकाल रहती वह बिन्दुरूप में भी सहज स्थित हो सकेगा। अगर अव्यक्त स्थिति नहीं है तो बिन्दुरूप में स्थित होना भी मुश्किल लगता है। इसलिए अभी इसका भी अभ्यास करो। शुरू शुरू में अव्यक्त स्थिति का अभ्यास करने के लिए कितना एकांत में बैठ अपना व्यक्तिगत पुरुषार्थ करते थे। वैसे ही इस फाइनल स्टेज का भी पुरुषार्थ बीच-बीच में समय निकाल करना चाहिए। यह है फाइनल सिद्धि की स्थिति। इस स्थिति को पहुँचने के लिए एक बात का विशेष ध्यान रखना पड़ेगा। आजकल वह गवर्नमेंट कौन सी स्कीम बनाती है? उन्हों के प्लेन्स भी सफल तब होते हैं जब पहले-पहले यह लक्ष्य रखते हैं कि सभी बातों में जितना हो सके इतनी बचत हो। बचत की योजना भी करते हैं ना। समय बचे, पैसे बचें, एनर्जी की बचत करना चाहते हैं। एनर्जी कम लगे और कार्य ज्यादा हो। सभी प्रकार की बचत की योजना करते हैं। तो अब पाण्डव गवर्नमेंट को कौन सी स्कीम करनी पड़े? यह जो सुनाया की बिन्दुरूप की सम्पूर्ण सिद्धि की अवस्था को प्राप्त करने के लिए पुरुषार्थ करना पड़े। अभी जिस रीति चल रहे हैं उस हिसाब से तो सभी यही कहते हैं कि बहुत बिजी रहते हैं, एकांत का समय कम मिलता है, अपने मनन का समय भी कम मिलता है। लेकिन समय कहाँ से आएगा। दिन प्रतिदिन सर्विस भी बढती जानी है और समस्याएं भी बढती जानी हैं। और यह जो संकल्पों की स्पीड है वह भी दिन प्रतिदिन बढ़ेगी। अभी एक सेकंड में जो दस संकल्प करते हो उसकी डबल ट्रिपल स्पीड हो जाएगी। जैसे आजकल जनसंख्या का हिसाब निकालते हैं ना कि एक दिन में कितनी वृद्धि होती है। यहाँ फिर यह संकल्पों की स्पीड तेज़ होगी। एक तरफ संकल्पों की, दूसरी तरफ ईविल स्पिरिट्स (आत्माओं) की भी वृद्धि होगी। लेकिन इसके लिए एक विशेष अटेंशन रखना पड़े, जिससे सर्व बातों का सामना कर सकेंगे। वह यह है कि जो भी बात होती है उसको स्पष्ट समझने के लिए दो शब्द याद रखना है। एक अंतर और दूसरा मन्त्र। जो भी बात होती है उसका अंतर करो कि यह यथार्थ है या यथार्थ है। बापदादा के समान है वा नहीं है। बाप समान है वा नहीं? एक तो हर समय अन्तर (भेंट) करके उसका एक सेकंड में नॉट या तो डॉट। करना नहीं है तो फिर डॉट देंगे, अगर करना है तो करने लग जायेंगे। तो नॉट और डॉट यह भी स्मृति में रखना है। अंतर और मन्त्र यह दोनों प्रैक्टिकल में होंगे। दोनों को भूलेंगे नहीं तो कोई भी समस्या वा कोई भी ईविल स्पिरिट सामना नहीं कर सकेगी। एक सेकंड में समस्या भस्म हो जाएगी। ईविल स्पिरिट्स आप के सामने ठहर नहीं सकती हैं। तो यह पुरुषार्थ करना पड़े। समझा।

(ईविल स्पिरिट्स का रूप कौन सा है?) उनका स्पष्ट रूप है किन्हीं आत्माओं में प्रवेश होना। लेकिन ईविल स्पिरिट्स का कुछ गुप्त रूप भी होता है। चलते-चलते कोई में विशेष कोई न कोई बुरा संस्कार बिल्कुल प्रभावशाली रूप में देखने में आएगा। जिसका इफ़ेक्ट क्या होगा कि उनका दिमाग अभी-अभी एक बात, अभी अभी दूसरी बात। वह भी फ़ोर्स से कहेंगे। उनकी स्थिति भी एक ठिकाने टिकी हुई नहीं होगी। वह अपने को भी परेशान करते हैं, दूसरों को भी परेशान करेंगे। स्पष्ट रूप में जो ईविल स्पिरिट्स आती हैं उसको परख कर और उससे किनारा करना सहज है। लेकिन आप लोगों के सामने स्पष्ट रूप में कम आएगी। गुप्त रूप में बहुत आएगी। जिसको आप लोग साधारण शब्दों में कहते हो कि पता नहीं उनका दिमाग कुछ पागल सा लगता है। लेकिन उस समय उसमें यह ईविल अर्थात् बुरे संस्कारों का फ़ोर्स इतना हो जाता है जो वह ईविल स्पिरिट्स के समान ही होती है। जैसे वह बहुत तंग करते हैं वैसे यह भी बहुत तंग करते हैं। यह बहुत होने वाला है। इसलिए सुना कि अभी समय की बचत, संकल्पों की बचत, अपनी शक्ति की बचत यह योजना बनाकर बीच-बीच में उस बिंदी रूप की स्थिति को बढ़ाओ। जितना बिन्दि रूप की स्थिति होगी उतना कोई भी ईविल स्पिरिट्स वा ईविल संस्कार का फ़ोर्स आप लोगों पर वार नहीं करेगा। और आप लोगों का शक्तिरूप ही उन्हों को मुक्त करेगा। यह भी सर्विस करनी है। ईविल स्पिरिट्स को भी मुक्त करना है क्योंकि अभी अंत के समय का भी अन्त है तो ईविल स्पिरिट्स वा ईविल संस्कारों को भी अति में जाकर फिर उन्हों का अंत होगा। किचड़ा सारा बाहर निकल कर भस्म हो जायेगा। इसलिए उन्हों का सामना करने के लिए अगर अपनी समस्याओं से ही मुक्त नहीं हुए होंगे तो इन समस्याओं से कैसे सामना कर सकेंगे। इसलिए कहते हैं बचत स्कीम बनाओ और प्रैक्टिकल में लाओ तब अपना और सर्व आत्माओं का बचाव कर सकेंगे। सिर्फ भाषण करने वा समझाने की सर्विस नहीं, अब

तो सर्विस का रूप भी बड़ा सूक्ष्म होता जाएगा। इसलिए अपने सूक्ष्म स्वरुप की स्थिति भी बढ़ाओ। यह सभी प्रत्यक्ष होकर फिर प्रायः लोप होना है। प्रायः लोप होने पहले प्रत्यक्ष हो फिर प्रायः लोप होंगे। सर्विस इतनी बढ़नी है जो एक-एक को दस का कार्य करना पड़ेगा।

शक्तियों की भुजाएं कितनी दिखाते हैं? भुजाओं का अर्थ है इतनी सर्विस में मददगार बनना। पाण्डव समझते हैं कि यह तो शक्तियों की ही भुजाएं हैं। पाण्डवों को फिर क्या दिखाया है, मालूम है? लम्बा दिखाया है। तो यह भी पाण्डवों की इतना ज्यादा मददगार बनने की निशानी है। लम्बा शरीर नहीं लेकिन बुद्धि लम्बी है। इन्हों का आगे दौड़ना गोया शक्तियों का आगे दौड़ना है। शक्तियों को आगे रखना यही इन्हों की दौड़ की निशानी है।

अच्छा !!!